

## Padma Shri



### DR. (PROF.) HARMOHINDER SINGH BEDI

Dr. Harmohinder Singh Bedi, is a renowned Hindi author and an academician from Punjab. He is presently the Chancellor of Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala. He is also serving as Council Member of Indian Council of Social Science Research (ICSSR), Ministry of Human Resource Development, Govt. of India, Member of Senate, Punjab University, Chandigarh; Executive member, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwa Vidyalaya, Wardha; Hindi Advisor to the Ministry of Information & Broadcasting, Govt. of India and Member of National Monitoring Committee on Minority Education, Govt. of India.

2. Born on 12<sup>th</sup> March, 1950 in Mukerian, Hoshairpur district of Punjab Dr. Bedi received his M.A. (Hindi). M.A. (Punjabi) and Ph.D. in Hindi from Guru Nanak Dev University where later he joined as Lecturer in 1978. He got D.Litt. from Bhagalpur University, Bihar. At Guru Nanak Dev University, he initiated research to trace and compile Hindi literature in Gurumukhi script. His father played a vital role in nourishing his early interest in literature, language and culture.

3. Dr. Bedi along with his several researchers discovered and edited several books of Hindi literature in Gurmukhi script and also wrote medieval Hindi literature historiography exploring the contribution of Punjab to literature and language. His three volume edited work on Sharda Rani Phillauri, Hindu social reformer and writer from Punjab, has reoriented the history of Hindi literature. His most notable contribution lies in exploring and interpreting the message of Sri Guru Granth Sahib, the most revered holy text of Sikhs. More than a religious text it represents syncretism of Indian tradition and a pan Indian dialogue of Gurus, Sufi's and Bhagat's. He compiled and edited the bani of Guru Tegh Bahadur ji famously known as Hind di Chadar and works of poets of Vidya Darbar of Guru Gobind Singh. Locating and editing this vast body of literature from Bhakti Kaav to Guru Kaav and many other centers of learning like Udasis and Nirmale have helped to redefine the contribution of Punjab to literature and learning.

4. Dr. Bedi's works have highlighted the spiritual, cultural and religious contribution of Punjab to Hindi literature in general and specially to explore the collective threads of knowledge and language that makes South Asia a unique and common cultural zone. Apart from publishing on all major national journals of Hindi, he has been regularly writing columns for several Hindi newspapers. A poet at heart, his creative side has gifted Hindi literature with over 15 books of poetry. His sensibilities are deep enough to touch all aspects of human life and his poems specifically brings to fore the state of contemporary human life disrupted by the forces of modernity. He has served as Professor Emeritus with the Punjabi University, Patiala from 2012 to 2014. He retired as Professor and Head of Department of Hindi. Guru Nanak Dev University, Amritsar, where he also served as Dean and Director of Chairs of Bhagat Kabir, Satguru Ram Singh and Swami Vivekanand.

5. Dr. Bedi has received various awards and honors including Sevi Puruskar in 2017; Shiromani Hindi Sahitkar in 2004 by Punjab Government and Raj Bhasha Puraskar in 2018 by Raj Bhasha Vibhag, Govt. of India for his contribution to the field of Hindi language.

## पद्म श्री



### डॉ. (प्रो.) हरमहेन्द्र सिंह बेदी

डॉ. (प्रो.) हरमहेन्द्र सिंह बेदी, पंजाब के प्रसिद्ध हिंदी लेखक और शिक्षाविद हैं। वह वर्तमान में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलाधिपति हैं। वह भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के परिषद सदस्य, सीनेट सदस्य, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़; कार्यकारी सदस्य, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; हिंदी सलाहकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार और अल्पसंख्यक शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय निगरानी समिति, भारत सरकार के सदस्य के रूप में भी सेवाएँ दे रहे हैं।

2. 12 मार्च, 1950 को पंजाब के होशियारपुर जिले के मुकेरियां में जन्में, डॉ. बेदी ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से एमए (हिंदी), एमए (पंजाबी) और हिंदी में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की, जहां बाद में वह वर्ष 1978 में व्याख्याता के रूप में कार्यभार भी ग्रहण किया। उन्होंने भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार से डी. लिट की उपाधि प्राप्त की। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में, उन्होंने गुरुमुखी लिपि में हिंदी साहित्य की खोज करने और उन्हें संकलित करने के क्षेत्र में शोध शुरू किया। उनके पिता उनके पिता ने साहित्य, भाषा और संस्कृति में उनकी प्रारंभिक रुचि जगाने और उसे आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. डॉ. बेदी ने अपने कई शोधकर्ताओं के साथ गुरुमुखी लिपि में हिंदी साहित्य की कई पुस्तकों की खोज की और उनका संपादन किया। उन्होंने साहित्य और भाषा में पंजाब के योगदान की खोज करते हुए मध्यकालीन हिंदी साहित्य का इतिहास भी लिखा। हिंदू समाज सुधारक और पंजाब की लेखिका शारदा रानी फिल्लौरी पर उनके तीन खंडों में संपादित कार्य ने हिंदी साहित्य के इतिहास को नया रूप और नई दिशा दी है। उनका सबसे उल्लेखनीय योगदान सिखों के सबसे प्रतिष्ठित पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के संदेश की खोज और उसकी व्याख्या करना है। यह पवित्र ग्रंथ धार्मिक पाठ से अधिक भारतीय परंपरा के समन्वय तथा गुरुओं, सूफी और भक्तों के अखिल भारतीय चिंतन का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने हिंदू दी चादर के नाम से प्रसिद्ध श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी और श्री गुरु गोबिंद सिंह के विद्या दरबार के कवियों की रचनाओं का संकलन और संपादन किया। भक्ति काव्य से लेकर गुरु काव्य और उदासी और निर्माले जैसे शिक्षा के कई अन्य केंद्रों तक विस्तृत साहित्य के इस विशाल भंडार की खोज और सम्पादन किया जिसने साहित्य और ज्ञान के क्षेत्र में पंजाब के योगदान को पुनः परिभाषित किया है।

4. डॉ. बेदी के कार्यों ने हिंदी साहित्य में पंजाब के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धार्मिक योगदान को उल्लेखनीय रूप से रेखांकित करते हुए इस तथ्य से अवगत कराया कि ज्ञान और भाषा की सूत्रबद्धता दक्षिण एशिया को अद्वितीय और साझा सांस्कृतिक क्षेत्र बनाती है। हिंदी की सभी प्रमुख राष्ट्रीय पत्रिकाओं के अलावा वह नियमित रूप से कई हिंदी समाचार पत्रों के लिए कॉलम लिखते रहे हैं। उनकी रचनात्मकता से हिन्दी साहित्य उनके 15 से अधिक कविता संग्रहों द्वारा समृद्ध हुआ है। उनकी गहरी संवेदनाएँ मानव जीवन के सभी पहलुओं को छूती हैं तथा उनकी कविताएँ आधुनिक दबाव से प्रभावित सामयिक मानवीय जीवन की स्थिति को उकेरती हैं। उन्होंने 2012 से 2014 तक पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में प्रोफेसर एमेरिटस के रूप में कार्य किया है। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, जहां उन्होंने भगत कबीर, सतगुरु राम सिंह और स्वामी विवेकानंद पीठ के निदेशक और डीन के रूप में भी कार्य किया, वहीं से प्रोफेसर और हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में वह सेवानिवृत्त हुए।

5. डॉ. बेदी को वर्ष 2017 में सेवी पुरस्कार; वर्ष 2004 में पंजाब सरकार द्वारा शिरोमणि हिंदी साहित्यकार पुरस्कार और वर्ष 2018 में हिंदी भाषा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषा पुरस्कार सहित विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं।